International Journal of Home Science 2023; 9(1): 14-17

ISSN: 2395-7476
IJHS 2023; 9(1): 14-17
© 2023 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 08-11-2022
Accepted: 14-12-2022

रजिया शाह
मानसरोवर ग्लोबल यूनिवर्सिटी,
भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत

जयश्री बाथम
मानसरोवर ग्लोबल यूनिवर्सिटी,
भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
रजिया शाह
मानसरोवर ग्लोबल यूनिवर्सिटी,
भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत

किशोरियों के परिधानों के बदलते स्वरूप - फैशन के परिदृश्य में

रजिया शाह, जयश्री बाथम

DOI: https://doi.org/10.22271/23957476.2023.v9.i1a.1395

सारांश
परिधान जिसे पहनावा भी कहते हैं, ऐसे वस्त्र हैं जिन्हें शरीर पर पहना जाता हैं। यह कपड़े ज्यादातर मनुष्यों तक ही सीमित हैं और लगभग सभी मानव समाजों की विशेषता हैं। परिधान का प्रकार शरीर के प्रकार, सामाजिक और भौगोलिक विचारों पर निर्भर करते हैं। कुछ भारत में जातीयता, भूगोल, जलवायु और क्षेत्र की सांस्कृतिक परंपराओं के आधार पर भिन्न-भिन्न प्रकार के वस्त्र धारण किये जाते हैं। भारत एक महान विविधता युक्त देश हैं। यहाँ विविध रंगों, फाइबर के अनुसार कपड़े उपलब्ध हैं। भारत में महिलाओं के कपड़े व्यापक रूप से भिन्न होतें है और स्थानीय संस्कृति, धर्म और जलवायु के साथ आधार पर होते हैं। यह संस्कृति धीरे-धीरे पाश्चात्य की पिछड़ती जा रही हैं। किशोरिया पाश्चात्य की ओर अग्रसर हो रहे हैं। आपकी वेशभूषा आपके व्यक्तित्व की एक मौन व्याख्या करती हैं। कपड़े सिर्फ शरीर ढकने के लिए नहीं पहने जाते बल्कि परिधान ऐसे हों कि आपका व्यक्तित्व निखारें।

कूटशब्द : परिधान, फैशन, किशोरावस्था।

1. प्रस्तावना
यद्यपि मानव की मूलभूत आवश्यकताओं में भोजन व पानी के बाद वस्त्र का ही स्थान हैं। किन्तु जिस प्रकार मनुष्य भोजन का उपयोग केवल भूख की तृप्ति के लिए ही नहीं करता वरन् वह उसमें भी विविधता व सन्तुष्टि प्राप्त करना चाहता हैं, उसी प्रकार वह परिधान का उपयोग भी न केवल शारीरिक सुरक्षा हेतु आवरण के रूप में करता है वरन् विविधता, सुन्दरता, नवीनता व सन्तुष्टि की प्राप्ति हेतु भी करता है। आज हमारे वस्त्र हमारे व्यक्तित्व को निर्धारित करते हैं। व्यक्तित्व के अनुकूल वस्त्र जहाँ व्यक्तित्व को द्विगुणित कर देते हैं वही वह मानसिक सन्तोष प्रदान करते है। देखने वाले जब वस्त्रों की प्रशंसा करते हैं। तब आत्मसुख व आत्मविश्वास बढ़ता है। यह आत्मविश्वास व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होता है। उचित सिलाई व डिजाईन के वस्त्र जहाँ आत्मविश्वास देते हैं, वहीं आकर्षण का केन्द्र बनते हैं। प्रारम्भ में मनुष्य परिधान का उपयोग केवल तन को ढकने के लिये करता था व विकास की उस प्रारम्भिक अवस्था मे वस्त्र तन्तु भी सीमित मात्रा में होते थे।

किन्तु जैसे-जैसे प्रगति हुई वस्त्र तन्तु असीमित मात्रा में उपलब्ध होने लगे व सभी की अपनी विशेषताएँ होती हैं, अतः गृहिणी के सामने वस्त्रों का चुनाव चुनौती बन गया हैं।

1.1 विभिन्न प्रकार की आकृति एवं उनके लिए परिधान का चुनाव

मानव शरीर की बाढ़ प्रकृति के नियम के अनुसार बढ़ती है। शरीर के अलग - अलग हिस्से शरीर के साथ विशेष प्रमाण में बढ़ते हैं। पैर एवं धड़ की लम्बाई के अनुपात में सिर एवं गर्दन भी बढ़ते हैं। शरीर में पाई जाने वाली समानताओं व असमानताओं ध्यान में रखकर वस्त्रों की कटाई करते समय ध्यान में रखना आवश्यक है।

(i) सामान्य शरीर- इस प्रकार की आकृति में कोई दोष नहीं होता एवं आनुपालिक होता है पुरुषों की ऊँचाई 163 से. मी. एवं महिलाओं की ऊँचाई 158 से. मी. होती है। ऐसे पुरुषों एवं महिलाओं के सभी अंग अनुपात में होते हैं

(ii) असामान्य शरीर- जब व्यक्ति के शरीर का अंग कोई अंत प्रमाण से बाहर होता है, कम या अधिक, तब असामान्य शरीर कहते हैं उदाहरण- बड़ा पेट, भारी छाती, की उभरे नितम्ब, मनुष्य के शरीर में कई तरह के दोष, असमान - यताएँ पाई जाती हैं।

a) अकड़ा हुआ शरीर
b) आगे झुका हुआ
c) मोटा शरीर
d) दलवा कंधे
e) सीधे कंधे
f) उठी हुई छाती
g) समतल छाती
h) भारी कूल्हे
i) चपटे नितम्ब
j) उठी हुई पीठ

1.2 परिधान का सामाजिक और मनोवैज्ञानिक महत्व

किसी व्यक्ति को व्यक्तिगत रूप से जानने से पहले सबसे पहला प्रभाव जो पड़ता है, वह उसके परिधानों का होता है। वह व्यक्ति किस से अपने आपको तरह सजाता हैं, उसके चलने का तरीका, उसके बात करने का तरीका, अपने आपका, वह किस तरह से ध्यान रखता है। इन सब बातों पर उसका पूरा व्यक्तित्व निर्भर करता है और यही तथ्य व्यक्तित्व को उभार कर सामने लाते हैं। उस व्यक्ति के परिधान किस हद तक उस व्यक्ति को सामने लाते हैं। यह बात पहने गए वस्त्रों के डिजाइन, रंग आदि पर निर्भर करती है यह नाकर्ष।

1.3. परिधान के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त

a) मोडेस्टी सिद्धान्त
b) इनमोडेस्टो सिद्धान्त
c) सुरक्षा सिद्धान्त
d) सजावट सिद्धान्त।

a) मोडेस्टी सिद्धान्त (Modesty Theory)

कुछ मनोवैज्ञानिकों का यह सोचना था कि अपने शरीर को ढँकने की इच्छा मनुष्य को तब शुरू हुई थी शर्म का एहसास हुआ। अन्य मनोवैज्ञानिकों ने कहा कि मोडेस्टी के चलते मनुष्य ने कपड़ा धारण करना बाद में शुरु किया, जब उसको जब कपड़े पहनने की आदत हो गई। Modesty की आदत कपड़े पहनने की आदत के साथ ही आती है। कुछ लोगों ने सोचा कि शरीर के उसी भाग को मनुष्य ने ढँकना शुरू किया, जिसकी ओर वह विपरीत सेक्स को आकर्षित करना चाहता था।

b) इनमोडेस्टी सिद्धान्त (Inmodesty Theory)

कुछ मनोवैज्ञानिकों का यह सोचना था कि Modesty बल्कि उसका शर्म का नतीजा नहीं, कारण है। कपड़े पहनने से अपने शरीर को ढंकता नहीं बल्कि वह उन अंगों को ढँककर दूसरों को आकर्षित करता है। इसके लिए इस सिद्धान्त को Snmodesty कहा जाता है। इन लोगों का यह सोचना है कि अपने शरीर को और आकर्षक बनाने के लिए ही मनुष्य ने कपड़ा पहनना शुरू किया।

c) सुरक्षा का सिद्धान्त (Protection Theory)

अपने शरीर वस्त्र का (Protection Theory), की सुरक्षा करना ही मकसद था। कपड़े पहनने से शारीरिक बल्कि मानसिक सुरक्षा भी मिलती है। यदि इतिहास की ओर नज़र डाले तब पाते हैं कि किस तरह से मनुष्य एक स्थान से दूसरे स्थान पर भोजन की खोज में निकलता था और साथ-ही-साथ हर तरह से अपने शरीर को बचाने का उपाय सोचना पड़ता था।

d) सजावट सिद्धान्त (Decoration Theory)

यह एक ऐसा सिद्धान्त है, जिसको आमतौर पर सबने माना है, क्योंकि लोगों का सोचना है कि मनुष्य की इच्छा अपने आपको सजाने सँवारने के चलते ही उसने वस्त्र धारण तथा सजावट की सामग्री का इस्तेमाल करना शुरू किया।

2. फैशन

फैशन का प्रारम्भ कहाँ से होता है, यह भित्र-भित्र स्थानों में मित्र होता है। सामान्यतः यह माना जाता है कि फैशन का

प्रारम्भ डिजाईनरों के यहाँ से होता है। फैशन डिजाईनर पारिवारिक परिधानों के आधार पर परिधान की डिजाइन में परिवर्तन लाकर नया फैशन प्रस्तुत करते हैं। जैसे कच्छ में प्रचलित स्त्री -पुरुष के पारम्परिक परिधान को एक नया रूप बेकर आधुनिक फैशन का ग्लैमरस परिधान बना दिया और आजकल यह पूरे विश्व में पियके कार्डिगन्स क्रियेशन के नाम से विख्यात है। घाघरा चोली का प्रचलन अब सिर्फ राजस्थान में नहीं रहा, इसे पूरे देश की आधुनिक फैशन पसन्द युवतियाँ पहनती हैं, आज से करीबन 30 वर्ष पूर्व दीले पतलून पहने जाते थे, उसके बाद टाइट पेन्ट पहनी जाती थी और आजकल इन दोनों को मिलाकर बैगी पेन्ट बना दी गई। इस प्रकार प्रत्येक नये फैशन का परिधान प्राचीनतम और पूर्व फैशन का मिश्रण रहता है। वास्तव में फैशन परिवर्तन का नाम है। प्रत्येक परिवर्तन पसन्द व्यक्ति फैशन के अनुरूप परिधानों का चयन करता है। फैशन में परिवर्तन यह कुछ उचित कारण रहते हैं। जैसे- बातावरण के कारण नई आवश्यकतायें उत्पन्न हो जाती है। उदाहरण के लिये 20वीं सदी के प्रारंभ में जब महिलाओं को आर्थिक एवं राजनीतिक स्वतंत्रता मिली थी। इसके पश्चात् इन्होंने पुराने फैशन को त्यागकर वस्त्रों में, केश विन्यास में, परिवर्तन अपनी सुविधा के अनुसार किये। कुछ समय के पश्चात् जब महिलायें एक्सीक्यूटिव जॉब में आने लगीं तो टेलरड सूट मैचिंग बैग आदि का उपयोग करने लगी।

तकनीकी में विकास ने फैशन को और भी अधिक उच्च स्तर पर पहुँचाया है। कुछ नये, लंतु एवं फैब्रिक की खोज हुई। ताप सुनम्य रेशे जिनके द्वारा वॉश एंड बीयर फैब्रिक तैयार किये गये, उनको लोगों ने पसंद किया। स्ट्रेच फैब्रिक में उर्थात उस समय हुई जब टाइट पैंट का फैशन आया।

3. साहित्य का पुनरावलोकन

किशोरावस्था के दौरान कपड़ों का उपयोग उनके प्रतीकात्मक मूल्य और साथियों के साथ संबंध स्थापित करने की अपनी शक्ति के कारण, किया जाता है, जो बच्चों के किशोरावस्था में पहुंचने पर जानकारी का सबसे महत्वपूर्ण स्त्रोत होते है Chaplin & Forum wos इस उम्र के बच्चे उच्च स्तर के भौतिकबाद का प्रदर्शन करते हैं भौतिकवाद और आत्म-सम्मान दोनों ही विपरीत प्रति प्रवृत्तियाँ (Chaplin & John, 2007, Rosenberg, 1979) निम्न स्तर के आत्मसम्मान वाले लोग आमतौर पर कपड़ों को अधिक महत्व देते हैं। (Fensen and Osterguard 1998)

4. भारतीय महिलाओं के पारंपरिक परिधान

भारतीय महिलाओं के वस्त्र व्यापक रूप से भिड़ा होते है। यह स्थानीय, संस्कृति, धर्म और जलवायु के साथ बारीकी से जुड़ा हुआ है। ऐतिहासिक दृष्टि से और महिला के कपड़े, पुरुष सरल लंगोट से विकसित हुए हैं। परिधान शरीर को ढूँकने के लिए, उत्सवों में, नृत्य प्रदर्शन और दैनिक पहनने में इस्तेमाल किए जाते है। शहरी क्षेत्रों में पश्चिमी पहनावा आम और सामान्य रूप से सभी सामाजिक स्तर के लोगों द्वारा पहना जाता है। भारत एक महान विविधता युक्त देश है। यहाँ दीव, फाइबर, रंग और कपड़े में विभिगता हैं। धर्म और रस्मों आधारित परिधानों में रंग विशेष पर रंगों का महत्व होता है। उदाहरण के लिए हिंदू देवियों की पोशाख लाल व हरी बिरंग की विशेष होती है। पारसी और ईसाई की शादियों के लिए सफेद कपड़े पहनते हैं। भारत में कपड़ो के लिए भारतीय कढ़ाई की विस्तृत विविधता भी शामिल हैं।

(a) साड़ी

साड़ी भारतीय उपमहाद्वीप का महिला परिधान हैं। साड़ी चार से नौ मीटर लंबी, बिना सिले कपड़े की एक पट्टी होती है, जो विभिन्न शैलियों में शरीर पर लिपटी है। सम्बलपुर से पूर्व मैसूर सिल्क, कर्नाटक में कांचीपुरम, तमिलनाडु के दक्षिण से बैठनी तथा पश्चिमी से बनारसी साड़ी प्रचलित है। साड़ियों को आमतौर पर अलग-अलग स्थानों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है। केरल में मुँहुँ, कहा जनता है। कर्नाटक में सीरे, असम में मेखेल सदोर, कहा जाता है।

(b) सलवार कमीज

सलवार कमीज महिलाओं के लिए सबसे लोकप्रिय पोशाल बन गया हैं। यह पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश में महिलाओं के पारंपरिक वस्त्र है। महिलाओं के सिर और कंधे को कवर करने के लिए सलवार कमीज के साथ एक दुपट्टा ओढ़ा जाता हैं। अनारकली सूट उत्तरी, पाकिस्तान मैं भारत, महिलाओं द्वारा पहना जाता है। आज के फैशन के दौर में सलवार कमीज के कई नए रूप आ गए हैं, जैसे चूड़ीदार, पेंट, प्लाजो, स्कर्ट आदि । स्कर्ट, घाघरा-चोली का नया रूप हैं। घोघरा चोला था एक लहंगा जिसके साथ एक चोली होती है राजस्थान और गुजरात में महिलाओं के पारंपरिक कपड़े हैं।

(c) अनारकली सूट

अनारकली सूट एक लंबा फ्रॉक शैली शीर्ष से बना होता है। अनारकली उत्तरी भारत, पाकिस्तान और मध्य पूर्व में अधिकतर पहना जाता है। शादी, कार्यों या अन्य आयोजनों में भारी कढ़ाई वाले अनारकली सूट पहने जाते हैं।

5. वस्त्र, फैशन और आपका व्यक्तित्व

आपकी वेशभूषा आपके व्यक्तित्व की एक मौन व्याख्या करती है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा जीवन जीने

के लिए उसे तीन आवश्यकताएँ पूर्ण करनी आवश्यक होती है। वे प्रमुख है भोजन वस्त्र और मकान मनुष्य ने निरंतर तरक्की की है आज मनुष्य की आवश्यकता इन तीनों के अलावा और भी बढ़ गई है, जैसे मान, सम्मान, इज्जत आदि। आज मनुष्य प्रदर्शन, प्रतिष्ठा व प्रतिस्पर्धा की होड़ में हैं, जिससे वह अपने आपको सुन्दर और सजीला भी बनाना चाहता है। मनुष्य की जरूरतों को अर्थात् मनुष्य को सुन्दर बनाने में वस्त्रों की महत्वपूर्ण भूमिका हैं।

वस्त्रों में समय के साथ-साथ निरंतर परिवर्तन आते जा रहे हैं तथा अलग-अलग मौसम मैं अलग-अलग वस्त्रों का प्रयोग किया जाता है, जिसे मनुष्य उचित अवसर पर धारण कर सम्मान बनाता है तथा देखा भी जाता है, जो अच्छे वस्त्र धारण करता है, उसे समाज अलग तरीके से देखता है, अर्थात् उसे पढ़ा लिखा समझदार व्यक्ति समझा जाता है। वस्त्रों के अनुसार व्यक्ति की समझदारी, गुण आदि का पता लगाया जा सकता है अतः विभिन्न उम्र, लिंग, मौसम, समाज राज्य, आर्थिक स्थिति, अवसर, संस्कृति, धर्म तथा शैक्षणिक स्तर पर वस्त्रों की प्रमुख भूमिका हैं। किशोरियाँ अपने आप को आकर्षण का केन्द्र बनाने के लिए वस्त्रों में विभिन्नता की चाहत महसूस करते हैं। साथ फैशन के अनुरूप ही वस्त्रों की आवश्यकता महसूस की जाती है। फैशन के दृष्टिकोण से इस उम्र में वस्त्र का आकर्षण फैशन के अनुरूप, शिष्टता की सीमा में सुविधाजनक होने चाहिए। किशोरियाँ वर्तमान में चल रहे फैशन के अनुरूप ही वस्त्रों का सामान्यत: चयन करती है सभी एक ही तरह के वस्त्रों का चयन करती है। परन्तु जैसे-जैसे उम्र बढ़ती जाती है, चयन सम्बन्धी प्रक्रिया भी परिवर्तित हो जाती हैं। परिधान खरीदते समय जलवायु का विशेषकर ध्यान रखना चाहिए। कई लोग बिना विचार किये वस्त्र खरीदते है।

6. निष्कर्ष

आपकी वेशभूषा आपके व्यक्तित्व की एक मौन व्याख्या करती है। कपड़े सिर्फ शरीर ढकने के लिए नहीं पहने जाते, बल्कि परिधान ऐसे हों कि आपका व्यक्तित्व निखरें। सुरुचिपूर्ण और समयानुसार पहने गये वस्त्र आपके व्यक्तित्व को निरवारते है। फैशन के परिवर्तन की दर अलग होती हैं। कपड़े निजी या सांस्कृतिक बयान या दावा, सामाजिक समूह के मानकों की स्थापना, अनुरक्षण या अवहेलना और आराम और कार्यक्षमता की सराहना सहित अन्य सामाजिक संदेश भी संसूचित करते है। उदाहरण के लिए महंगे पहचान का कपड़े पहनने से धन के होने का धन की छवि का या गुणवत्ता वाले कपड़ों की सुलभता का पता चलता है।

7. सन्दर्भ

1. Chaplin LM, John DR. The development of self brand Connections in children and Adolescents; Journal of Consumer Research. 2005a;32(1):119-129.
2. Chaplin LN, John DR. Growing up in a Material World: Age Differences in Materialism in children and Adolescents; Journal of Consumer Research. 2007;34(4):480-493.
3. Rosenberg M. Conceiving the self, Florida: Krieger Publishing company; c1979.
4. अग्रवाल, रजनी. परिधान निर्माण और फैशन डिजाइनिंग, प्रथम संस्करण 2002 पृष्ठ 47-56
5. अभय ऐ, कोजेरेली सी, मैकलाघलिन के, हर्निश आर जे: यौन इरादे की धारणाओं पर कपड़ों और रंगों की सेक्स संरचना के प्रभाव; क्या महिलायें और पुरुष इन संकेतों का अलग-अलग मूल्यांकन करते है? जर्नल ऑफ़ एप्लाइड सोसल साईकोलाजी; 1987;17(2):108-126.
6. काटून डी डी, एडमंड्स ई एम: महिलाओं के कपड़े की शैली से सम्बंधित विपरीत लिंग के पहले छापों का अनुमान, अवधारणात्मक और मोटर कौशल 1987;65(2):406
7. जॉनसन के के पी, लेनन एस जे: पोशाक का सामाजिक मनोविज्ञान, विश्व पोशाक और फैशन का विश्वकोश द्वारा सम्पादित; आयशर जेबी; 2014, न्यूयार्क एनवाई बर्ग
8. फ्रेडरिक्सन बी एल, रोबर्ट्स टी ऐ, नोल एस एम क्विन डी एम, त्वेन्ज जे एम: वह स्विमिंग सूट बन जाता है; आत्म-वस्तु में सेक्स अंतर, संयमित भोजन, और गणित का प्रदर्शन; व्यक्तित्व और सामाजिक मनोविज्ञान का अख़बार; 1998;75(1):269.
9. बटालिया, संतोष. वस्त्र निर्माण, अभिकल्पना एवं शैली, प्रथम संस्करण, 2013 पृष्ठ. 127-132.